Aayushi International Interdisciplinary Research Journal (AIIRJ)

VOL- IX | ISSUE- II | FEBRUARY | 2022 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.331 | ISSN 2349-638x

मुगलकालीन शाशकों का कलात्मक पक्ष
(स्थापत्य, साहित्य एवं संगीत एक अध्ययन)

नितेश रिणवा
शोधार्थी इतिहास विभाग
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

डॉ० नीलम शर्मा
इतिहास विभाग
सहायक आचार्य कला संकाय
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर

प्रस्तावित शोध की भूमिका

मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय भारतीय समाज प्रमुखतया दो वर्गों में विभक्त था, हिन्दू और मुसलमान। हिन्दू समाज का मूल आधार जातिप्रथा और वर्ण व्यवस्था थी, समाज में कई जातियाँ और उपजातियाँ थीं। हर व्यवसाय, शिल्प और सामाजिक व धार्मिक कार्य के लिये जाति थी। समाज में जन्म से जाति निर्दिष्ट होती थी, कर्म से नहीं। जो व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता था, वह उसी जाति का व्यवसाय करता था, उसे वह परिवर्तित नी कर सकता था। विदेशी मुस्लिम शासन से, समाज, धर्म और संस्कृति की रक्षा के लिये, हिन्दू रक्त की पवित्रता बनाये रखने के लिये जातियों के नियम और नियंत्रण अब पहिले की अपेक्षा अधिक जटिल कर दिये गये थे। समाज में जातियों के अनेक विवेकशून्य नियंत्रण, रीतियाँ, परिपाटियाँ बन गयी थीं। हिन्दुओं के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन को जाति-प्रथा के नियमों और नियंत्रणों ने जकड़ दिया गया था। किसी हिन्दू के लिये अपने जीवन में उत्कर्ष, परिवर्तन या नवीनता के लिये जाति के नियंत्रणों के बोझ से मुक्त होना कठिन कार्य था।

हिन्दू समाज में मुख्यतः दो भाग माने जाते थे। एक भाग द्विज का था, द्विज अर्थात् यज्ञोपवीत धारण करने वाले, कुलीन पवित्र उच्च वर्ग के ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य लोग और दूसरा भाग द्विजेतर वर्ग था। इसमें शूद्र, नीच, अन्त्यज, अपवित्र, अछूत और हीन व्यवसाय करने वाले लोग थे। समाज में ब्राह्मण वर्ग या पुरोहित व पुजारी वर्ग का आतंक अभी था। अनेक धार्मिक और सामाजिक कर्मकाण्ड ब्राह्मण वर्ग द्वारा ही संपादित होते थे। समाज में ब्राह्मण पूजनीय माना जाता था, चाहे वह निरक्षर हो, दुराचारी हो या सदाचारी। सामाजिक व्यवस्था में ब्राह्मणों का स्थान सबसे ऊँचा था। साथ ही साथ धर्म पर उनका एकाधिकार था। केवल ब्राह्मणों और क्षत्रियों को वेदाध्ययन का अधिकार था, एक तरह से मोक्ष केवल उन्हीं दोनों के लिए सुरक्षित था। क्षत्रियों का भी सम्मान कम नहीं था, विशेषकर हिन्दू राजपूत राज्यों में। वैश्य वर्ग के लोग विभिन्न उद्योग व्यवसाय और व्यापार करने वाले अपनी धन-सम्पन्नता के कारण समाज में प्रतिष्ठित थे, तथा वे उच्च माने जाते थे। नीच, हीन व्यवसाय वाले व्यक्ति अभी भी अन्त्यज, अछूत और तिरस्करणीय माने जाते थे। वे कई मानव अधिकारों से वंचित थे। उनके साथ अन्याय और अमानुषिक व्यवहार होता था। छुआछूत की भावना समाज में बलवान थी।

प्रस्तावित शोध के सोपान

समाज में स्त्रियों की दशा दयनीय थी। उनके गौरव, आदर और प्रतिष्ठा का स्तर गिर गया था। स्त्रियों की स्वतंत्रताओं पर अनेक प्रतिबन्ध लगा दिये गये थे। उनके लिए विद्याध्ययन वर्जित था। घर की चहारदीवारी में ही उनका कार्यक्षेत्र सीमित था। स्त्री भोगविलास और सन्तानोत्पत्ति की साधन मानी जाती

थी। समाज में बहुपत्नी प्रथा, सती प्रथा, बाल विवाह व पर्दा प्रथा प्रचलित थे। अपने पति या परिवार के पुरुष सदस्य पर ही उनका जीवन आश्रित था। इससे स्त्रियों की दशा सोचनीय हो गयी थी।

प्रस्तावित शोध का महत्त्व

हिन्दू समाज में वैष्णव, शैव, शाक्त और जैन धर्म का प्राधान्य था। इनके अतिरिक्त अन्य कई मत और सम्प्रदाय भी थे। वैष्णव, शैव और शाक्त धर्मों की छाया में, मंदिरों, देवालयों और मठों में धर्म के नाम पर अनाचार व दुराचार होता था। धर्म और सदाचारपरायण जीवन के स्थान पर मंत्र-तंत्र, व्रत, अनुष्ठान, अलौकिक शक्ति और सिद्धियों को अधिक महत्व दिया जाता था। बहुदेववाद प्रचलित था। अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियों की पूजा होती थी। जन-साधारण में मूर्ति-पूजा, भूत-प्रेत पूजा और वृक्ष-पूजा प्रचलित थी। कर्मकाण्ड का बाहुल्य था। व्रत, पूजापाठ, अनुष्ठान, यज्ञ, हवन आदि विभिन्न प्रकार के धार्मिक क्रिया-कलाप थे। धर्मशास्त्रों का अध्ययन केवल द्विजों तक ही सीमित रखा गया। शूद्र एवं अछूत वेदों, पुराणों, स्मृतियों आदि धर्मशास्त्रों के अध्ययन से वंचित रखे गये थे।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य

हिन्दू धर्म और समाज में व्याप्त दोषों के निवारणार्थ भक्तों, संतों और सुधारकों ने मुगल साम्राज्य की स्थापना के पूत्र अनेक प्रयत्न किये। जनसाधारण को सदियों की मानसिक दासता से मुक्त करने, समाज को अनेक कुप्रथाओं के इन्द्रजाल से छुड़ाने के लिए और धर्म का विकृत रूप नष्ट करने के लिए रामानन्द, कबीर, चौतन्य, नानक, रैदास, मीरा, एकनाथ, तुकाराम आदि संतों और भक्तों ने आजीवन प्रयास किया। इन संतों और सुधारकों के प्रचार का मुख्य आधार था सदाचारी जीवन और भगवान की अनन्य भक्ति। उनका उद्देश्य था कि जाति-पांति के भेदभाव मिथ्या हैं और देवी-देवताओं के प्रति अन्धविश्वास, पूजा-पाठ, मनुष्य के मोक्ष के मार्ग में बाधक हैं। इसके प्रतिकूल सबके साथ समानता का व्यवहार और ईश्वर भक्ति ही सच्ची साधना ही मनुष्य को मुक्ति दिला सकती है और समाज का उत्कर्ष कर सकती है। इससे धर्मग्रन्थ किसी वर्ग की संपत्ति न बनकर जनसाधारण की संपत्ति बन गये, धर्म और मोक्ष का द्वार सब के लिए खोल दिया गया और धर्म ने प्रजातत्रात्मक रूप धारण कर लिया। जाति-प्रथा के बन्धन और नियंत्रण ढीले होने लगे।

अनेक अनुभवी विद्वान् मुस्लिम शासन में पदाधिकारी नियुक्त किये गये। संस्कृत ग्रन्थ 'विदग्ध माधव' और 'ललित माधव' के रचियता रूप गोस्वामी बंगाल के सुलतान हुसेनशाह के मंत्री थे। बंगाल के सुलतानों ने बंगला साहित्य के उत्थान का विशेष प्रयास किया। हुसेनशाह के शासकाल में गीता का अनुवाद और नुसरतशाह के शासनकाल में संस्कृत के रामायण और महाभारत का अनुवाद बंगला में किया गया। इससे मुस्लिम युग का नवीन भारतीय समाज निर्मित हो रहा था। मुगल साम्राज्य की स्थापना के पूर्व की इस सामंजस्य, सम्मिश्रण, समन्वय के वातावरण का लाभ मुगल सम्राट अकबर ने उठाया। उसने मुगल साम्राज्य का विस्तार कर एक विशाल राजनैतिक भवन खड़ा कर दिया।

शोध का निष्कर्ष :

भारतीय इतिहास का मुगल काल वास्तव में राजनीतिक प्रभुत्व के लिए मुगल-अफगान-राजपूत-सिक्ख-प्रतिरोध का इतिहास है। राजनीतिक क्षितिज पर बड़ी ही द्रुतगति से नयी और पुरानी शक्तियों का उदय और अस्त हो रहा था। देश की अराजकता से लाभ उठाकर महत्वाकांक्षी देशी और विदेशी शासक इस संघर्ष में आ जुटे थे। मुगल इतिहास के उद्भव एवं विकास में बाबर ऐसे ही महत्वाकांक्षी विदेशी शासकों में एक था, जो इस देश में शक्तिशाली मुगलसत्ता की स्थापना का स्वप्न देख रहा था। उसके पहले जितने भी मुगल आये थे, उन्हें इस दिशा में विशेष सफलता नहीं मिली थी। हाँ, उनके

आगमन के फलस्वरूप जो 'नये मुसलमान' यहाँ आकर बस गये थे, वे समय-समय पर तुर्क-अफगान सुल्तानों के लिए सरदर्द अवश्य बन जाते थे। तैमूर के खूखार आक्रमण ने इस हिलती सल्तनत को आखिरी धक्का दे दिया था। अन्य आक्रमणकारियों के विपरीत उसने पंजाब पर कब्जा कर लिया और यही पंजाब का जख्म बाद में चलकर तुर्की सल्तनत के लिए नासूर साबित हुआ। बाबर इसी तैमूर का वंशज था। उसने उत्तरी भारत पर आधिपत्य कायम कर एक नयी मुस्लिम सल्तनत की स्थापना करने की योजना तैयार की थी। यह सही है कि बाबर ने मुगल सल्तनत की नींव डाली थी, पर उसका स्वप्न उसके जीवनकाल में पूरा नहीं हो सका और उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी हुमायूँ के समय में कुछ वर्षों के लिए मुगल साम्राज्य प्रायः खत्म सा हो गया था। शेरशाह के नेतृत्व में अफगानों का पुनर्जागरण इस नये साम्राज्य के लिए बड़ा ही महँगा साबित हुआ और हुमायूँ को दर-दर की ठोकरें खानी पड़ी। लेकिन राष्ट्रीयता की भावना और देशव्यापी संगठन के अभाव में वह नयी सल्तनत भी बालू की दीवार साबित हुई, जो अकबर के समय तक आते-आते लड़खड़ाकर सदा के लिए धराशायी हो गयी। १५२६ ई. में बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त करके भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना की।

शोध ग्रन्थ

१. सतीश चंद्र, मध्यकालीन भारत राजनीति समाज और संस्कृति, ओरियंट ब्लैकस्वान, नई दिल्ली, २००७
२. हरिश्चंद्र वर्मा, (संपा.), मध्यकालीन भारत खंड-२ १५४० से १७६१, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, नई दिल्ली, १९९५
३. इम्तियाज अहमद, मध्यकालीन भारत आठवीं से १६ वीं शताब्दी, नेशनल पब्लिकेशन, पटना, २००३
४. मणिकांत सिंह, भारतीय इतिहास एक विश्लेषण, किताब महल, नई दिल्ली, २००५
५. इतिहास लेखन, पूर्व आधुनिक परंपराएं-२ एम. एच. आई.-३, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, २००६